क्या हिन्दुत्व किसी जीवन-शैली का नाम है?

क्या हिन्दुत्व किसी जीवन-शैली का नाम है?

भारत के सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ ने ११ नवम्बर, सन् १९९५ ई. को एक निर्णय में घोषित किया कि हिन्दुत्व भारतीयों की जीवन-शैली है। कतिपय वरिष्ठ राजनेता भी इसी तरह के विचार समय-समय पर व्यक्त करते रहते हैं।

अभी इसी वर्ष (२००५ ई.) में भारत से कुछ लोग जर्मनी पुस्तक मेले में गये थे। उन्हें यह देखकर क्षोभ हुआ कि वहाँ के हवाई अड्डे पर ईसाई, यहूदी, पारसी, इस्लाम इत्यादि धर्मावलम्बियों के लिए पृथक्-पृथक् उपासना-स्थल नियत हैं; किन्तु हिन्दुओं के लिए कोई स्थान निर्धारित नहीं था।

सचाई तो यह है कि धर्म को आपके आचार्यों ने बाहर निकलने ही कब दिया था? समुद्र पार करना जिन्होंने प्रतिबन्धित कर रखा हो, उनसे कैसे आशा की जा सकती है कि वे धर्म को विदेशों में जाने की अनुमति देंगे? हिन्दुओं में धर्म के नाम पर जो कुछ भी प्रचलित है उसे विवेकानन्द जी ने जीवन-पद्धति की संज्ञा दी। क्या गलत कहा उन्होंने? यहाँ धर्म के नाम पर जो कुछ भी प्रचलन में है, जीवन-शैली ही तो है। चार वर्णों में बँटा समाज! कौन मन्दिर में जाय कौन न जाय? कौन अच्छा खाना खाये कौन न खाये? कौन कैसा वस्त्र पहने? कौन वरिष्ठ पद पाये? कौन जमीन पर सोये? यह जीवन-शैली नहीं है तो और क्या है?

जीवन-पद्धति देश, काल और परिस्थिति के अनुरूप बदलती ही रहती है, जबकि धर्म अपरिवर्तनशील होता है। एक ओर जीवन-यापन की सांसारिक व्यवस्था और दूसरी ओर परमात्मा में प्रवेश, स्थिति! दोनों की क्या तुलना हो सकती है? किसी जीवन-शैली को धर्म के समकक्ष स्थान देने के लिये आप आहें क्यों भर रहे हैं? जब यह धर्म नहीं है, मात्र जीवन-शैली है तो धर्म से क्यों होड़ लगाते हैं?

धर्म का विशुद्ध रूप तत्सामयिक आचार्यों ने भारतीय जनमानस तक जाने ही नहीं दिया। शासन-सूत्र और सामाजिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए महापुरुषों के नाम से स्मृति-ग्रन्थों की रचना करके जीवन-पद्धति को ही धर्म-धर्म कहकर भावप्राण जनता के समक्ष रखा गया और प्रशासनिक ढाँचे में ढालने से जनता इस जीवन-पद्धति को ही धर्म समझ बैठी। शिक्षा को प्रतिबन्धित कर व्यवस्थाकारों ने इन स्मृतियों को भी छिपाकर रखा। इनमें लिखा है कि इन स्मृतियों को वही पढ़ सकता है जो गर्भाधान से चिता तक का मन्त्र

जानता हो। केवल ब्राह्मण होना इसे पढ़ने के लिये पर्याप्त नहीं है, अधिकांश ब्राह्मण भी इसे नहींजानतेथे।

उन स्मृतियों कीव्यवस्थाथीकिजाति-पाँति में जीवन-यापन करना धर्म है, उसकाउल्लंघन अधर्म है। शूद्र मन्दिर न जाय, शादी-विवाह में भीकमरसेऊपरवस्त्रनपहने।वहगायकादूध पिये तो नरक जाय। अध्ययन-अध्यापन पर ब्राह्मणों का एकाधिकार, मन्त्रीपद ब्राह्मण को, न्याय ब्राह्मणकेपरामर्शसे....!छोटे-मोटेन्याय ब्राह्मण ही करेगा, राजा करता है तो नरक जायगा। बड़े मामलों में ब्राह्मण राजा से भी परामर्शकरले।धर्माध्यक्षब्राह्मण!अबरियासतों के ये कानून प्रभावी नहीं रहे। इन्हें मानने वाला कोई नहीं, इन पर चलने वाला कोई नहीं और इस व्यवस्था पर उँगली उठाने वाले करोड़ों हैं तो इस व्यवस्था को धर्म कहने की भूल का सुधारक्योंनकरलियाजाय?

क्योंनधर्म केविशुद्धस्वरूपकीपहचानकी जाय और उसे जन-जन तक देश-विदेश में प्रसारित किया जाय? इस प्रयास में सर्वप्रथम धर्म को उन धर्माचार्यों से मुक्त कराना होगा जो धर्मकोजकड़करबैठेहैं।

धर्म बचा था महापुरुषों के चिन्तन में, जो शान्त एकान्त जंगल में चिन्तनरत थे। उनके हृदय में धर्म तब भी सुरक्षित था, आज भी है। उनसे धर्म की परिभाषा लें, प्रसारित करें। ईसाई,यहूदीऔर इस्लामिकदेशोंमेंभीआपके लियेउतनीहीजगहहै।पहलेधर्म कीपरिभाषा प्रसारिततोकरें!

धर्म गढ़ना नहीं है। वह तो अपौरुषेय है। धर्मशास्त्र भी परमात्मा के श्रीमुख की वाणी श्रीमद्भगवद्गीता ही है। उसे जन-जन तक पहुँचानाआपकादायित्व है।

गीता की बहुमान्य टीकाएँ समय-समय पर होती रही हैं। सबने विविध दृष्टिकोणों से इस धर्मशास्त्र को देखने का प्रयास किया। सबकी अपनीउपयोगिताहै,अपनासौन्दर्यहैकिन्तुइन सबके होते हुए भी लाखों-करोड़ों हिन्दुओं का धर्मान्तरण रूकने का नाम नहीं ले रहा है। आवश्यकता है गीता के ऐसे भाष्य की, जो झोपड़ीसे महलोंतकसबकोएकजैसाआश्वस्त कर सके, जिससे ऊँच-नीच, अमीर-गरीब सब एक थाली में खाने लगें, एक माँ की सन्तान के रूप में सबको पहचानने लगें। गीता की सहज, सरल व्याख्या जो कृत्रिम न हो, अक्षरशः वही भाव हो जो भगवान् श्रीकृष्ण के थे। ऐसी बोधगम्य व्याख्या के रूप में स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजीकृत श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य 'यथार्थ गीता' आप सबके अनुशीलन के लिए प्रस्तुत है। इसकी तीन-चारआवृत्ति मात्रसेधर्म अपने विशुद्ध स्वरूप में उद्भासित होने लगता है।

धर्म आपको मन, क्रम, वचन से एक परमात्मा के प्रति समर्पण दिलाता है। भली प्रकार समर्पण सधते ही वह परमात्मा आपके अंतःकरण से जागृत होकर उठाने-बैठाने, मार्ग-दर्शन करने लगते हैं, सद्गुरु का परिचय देते हैं।सद्गुरु के उपलब्ध होतेहीमार्गप्रशस्तहोने लगता है, अन्तःप्रेरणा होने लगती है अन्यथा विश्वभर की जानकारियों का संग्रह करके भी कोई भाषा और बुद्धि-कौशल से धार्मिक निर्णय

नहींदेसकता।महापुरुषोंकेअभावमें समाज में भगवान् के प्रति श्रद्धा घट जाया करती है। बौद्धिकनिर्णयोंकीहीदेनहैकिव्यवस्था,रीति-रिवाज ही धर्म का स्थानलेलेतेहैं।सद्‌गुरुओं केअभावमें समाजनास्तिकहोजाताहै।मनुष्य श्रद्धा का पुतला है। विकल होकर यह भगवान् को ढूँढ़ता है। व्यवस्थाकार इन्हें कुछ-न-कुछ पकड़ातेचले जाते हैं।भगवान् श्रीकृष्ण केसमय में भीभारतअनेकानेककुरीतियोंमें उलझा था। भगवान्नेउनकुरीतियोंका निवारणकिया।

ठीक उसी प्रकार आज भारत शास्त्रविहीन भटकरहाहै।जबशास्त्रविस्मृतहोगया,जिसने जो कह दिया धर्म बन बैठा। करोड़ों भगवान्, करोड़ों मंत्र, करोड़ों पूजा-पद्धतियों में श्रद्धा का पुतला,ऋषियोंकीसंतानभारतभटकरहाहै।

आपकासर्वोपरि धर्मशास्त्र गीता है। विश्व का आदिधर्मशास्त्र गीताहीहै।मनुष्यकेजन्मसेभी पूर्वप्रसारितपरमात्माकेश्रीमुखकीवाणीगीता हीहै।यहमहाराजमनुकोविरासतमेंमिलीथी जिसको उन्होंने स्मृति में धारण कर लिया इसलिएमनुस्मृतिगीताहीहै।

गीता के होते हुए समाज में सम्प्रदाय, भ्रान्तियाँ, मत-मतान्तर, ऊँच-नीच, छूत-अछूत, सवर्ण-अवर्ण का गठन हो ही नहीं सकता। यह सबगीता के विस्मृत हो जानेकादुष्परिणामहै; क्योंकि गीता के अनुसार हम-आप सभी ईश्वर कीसन्तान हैं,उतनेहीपावनजितनाभगवान्!

गीता के अनुसार, एक आत्मा (परमात्मा) ही,परमसत्यहै, सनातन है।कण-कण मेंव्याप्त है। वह सर्वत्रसेदेखतेऔरसुनते हैं। हम-आप संकल्प बाद में करतेहैं,वहपहलेहीजानते हैं। उन एक परमात्मा की शरण जाना, उन्हें अपने श्रद्धापूरित हृदय में धारण करना धर्म है। जो उनके प्रति आस्थावान् है आस्तिक है, अस्तित्व का उपासकहैइसलियेआर्यहै।

उन परमात्मा के प्रति समर्पण के साथ उठना-बैठना, प्रत्येक कार्य समर्पण के साथ आरम्भ और सम्पन्न करना आर्यव्रत है, आर्य-संस्कृतिहै।

उनपरमात्माकोदेखना,स्पर्शकरना,उनमें प्रवेश करना, उनमें स्थिति प्राप्त करना और उनकी समग्र विभूतियों से अवगत होना आर्य-विधिहै।यहीआर्य-विधिमानव-संहिता गीताहै।

ॐ का जप आर्य-विधि की जागृति है। मात्र जीवन-शैली को ही धर्म की संज्ञा देना भयंकर भूलहै।इसकासुधारअपेक्षितहै।

आर्य विधि होने से हीप्राचीन नाम आर्य था। कालान्तर में इसका नाम सनातन पड़ा, क्योंकि आत्मा शाश्वत है; सनातन है, इसीलिए उसकी प्राप्ति की विधि होने से सनातन नाम पड़ा। करोड़ों वर्षों के अन्तराल से वर्तमान में इसका नाम है हिन्दू। हृदय + इन्दू = हिन्दू ''यानिशा सर्वभूतानां.....'' इस जगत रूपी रात्रि में उस परमात्मा का क्षीण प्रकाश सदा विद्यमान है। इसलिए एक नाम काल क्रम के अन्तराल से हिन्दू पड़ा। तीनों का अर्थ एक ही होता है। अर्थात् परम पवित्र है। इसका तात्पर्य है कि जगत केअन्धकार में होते हुए भी हृदय देश में वहपरमात्मा सदाविद्यमान है।